[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3403

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संगीत और समाज

डॉ. गोमती चेलानी
प्राध्यापक तथा विभागाध्यक्ष राजनीति शास्त्र
शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इंदौर

जीवन में कला का महत्वपूर्ण स्थान है। मानव की अनुकरण वृत्ति और सौंदर्य–प्रियता को कला की जननी माना जाता है। कला का सृजन करना तथा उसका उपभोग करना, यह मनुष्य जाति की अपनी विशिष्ट शक्ति है। अपनी इसी विशिष्टठ शक्ति के कारण वह अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ कहलाता है। कला आत्मा को समृद्ध बनाती है अतः कहा जाता है कि आत्म तृप्ति की क्षुधा से ही कलाओं की उत्पत्ति होती है।

कलाओं के मुख्य दो प्रकार बताए गए हैं . **1. ललित कलाएं और 2. ललितेर कलाएं।** जो कलाएं मुख्यतः मानव की भौतिक आवश्यकताओं को पूर्ण करती हैं, उन्हें ललितेर कलाएं कहते हैं। जैसे शिल्प कार्य बढ़ई का कार्य, बुनाई का कार्य आदि। इन कलाओं का मुख्य उद्देश्य उपयोगिता होता है अतः इन्हें प्रयुक्त कलाएं भी कहते हैं। कला का आनंद प्राप्त करने के उद्देश्य से जिन कलाओं का सृजन होता है, उन्हें ललित कलाएं कहते हैं। यह आनंद शुद्ध तथा इंद्रियातीत होता है। साहित्य, चित्रकला और संगीत ललित कलाओं के अंतर्गत आते हैं। ललित कलाएं मानव की नैतिक प्रगति की सूचक होती हैं जबकि ललितेर कलाएं उसकी बौद्धिक प्रगति, कार्यकुशलता और भौतिक प्रगति का प्रमाण देतीं हैं। कला, फिर चाहे वह ललित कला हो अथवा ललितेर कला, सुसंस्कृत मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है।

मुख्य 64 कलाओं में संगीत कला अपना प्रमुख स्थान रखती है। स्वर और लय के माध्यम से संगीत मानव के ऊर्मी तंत्र को स्पर्श करता है। कला प्रेमी होने के साथ–साथ मनुष्य एक सामाजिक प्राणी भी है। प्राचीन यूनानी दार्शनिक तथा राजनीति शास्त्र के प्रथम राजनीति वैज्ञानिक अरस्तू का मत है, श्मनुष्य अपने स्वभाव से एक राजनीतिक (सामाजिक) प्राणी है। ऐसे व्यक्ति को, जो समाज में नहीं रह पाता है अथवा जिसे समाज में रहने की आवश्यकता अनुभव नहीं होती है क्योंकि वह स्वयं पर्याप्त है, वह या तो पशु होता है या फिर देवता।[1]

मनुष्य की इस सामाजिक प्रवृत्ति को देखते हुए उसे समाज से पृथक नहीं किया जा सकता तथा उसकी आत्मिक तृप्ति हेतु सृजित संगीत को भी समाज से पृथक नहीं किया जा सकता। संगीत तथा समाज के इस घनिष्ठ संबंध को प्रस्तुत शोध आलेख में दर्शाने का प्रयत्न किया गया हे। साथ ही संगीत की सर्वव्यापकता तथा जीवन के हर क्षेत्र में उसके महत्वपूर्ण स्थान का प्रतिपादन करने का प्रयास भी किया गया है और शिक्षा में उसके उचित स्थान प्रदान किये जाने पर बल दिया गया है।

संगीत जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त

मनुष्य जीवन की एक भी अवस्था ऐसी नहीं है, जहां संगीत की आवश्यकता न हो। जब भी लोग किसी भी कारण से मिलते हैं अथवा एकत्र होते हैं, संगीत अवश्य होता है।[2] संगीत सब को प्रिय है। परिवार में नवजात शिशु का जन्म, उसे माता द्वारा लोरी का सुनाया जाना, विद्यालय तथा महाविद्यालय के विभिन्न समारोह, विवाह, मृत्यु, जवानों का युद्ध क्षेत्र की ओर प्रस्थान, स्टेडियम में खेल–कूद की गतिविधियां, प्रार्थना तथा किसी भजन संध्या का आयोजन आदि सभी अवसरों पर संगीत आवश्यक है। संगीत के बिना संसार की कल्पना तक नहीं की जा सकती। एक विद्वान फ्रेड्रिक नीट्जे ने सच ही कहा है .
"Without music life would be an error"- [3]

संगीत द्वारा समाज के हर वर्ग को प्रभावित किया जाना

जीवन के किसी भी क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्ति संगीत से आकर्षित हुए बिना नहीं रहते। विद्यार्थी, शिक्षक तत्वज्ञानी, राजनीतिज्ञ आदि लोगों को अधिक मानसिक श्रम करना होता है। संगीत सफलतापूर्वक इनके श्रम का निवारण करता है। इसी प्रकार कठोर शारीरिक श्रम करने वाले श्रमिक अपनी थकान दूर करके नया बल प्राप्त करने के लिए संगीत का आधार लेते हैं। कूटने, पीसने जैसे शारीरिक श्रम करने वाली स्त्रियां लोकगीतों के द्वारा नई स्फूर्ति प्राप्त करती हैं। युद्ध के समय पर बजाए जाने वाले वाद्यों और गाए जाने वाले गीतों के शौर्यवर्धक स्वरों के श्रवण से सामान्य शक्ति वाला मनुष्य भी वीरता

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

दिखाने के लिए तत्पर हो जाता है। पूर्ण ब्रह्म के साक्षात्कार के लिए योगी को संगीत साधना सहायक होती है। इस प्रकार महान विद्वान हो या अधम जंगली मानव, अमीर हो या गरीब सबको संगीत समान रूप से मुग्ध करता है। [4]

संगीत समाज का प्रतिबिंब

संगीत की रचना समाज में रहने वाले मनुष्यों द्वारा की जाती है, इसलिए जैसा समाज होगा वैसा ही संगीत निर्मित होगा। प्राचीन काल में, जबकि समाज की रचना अत्यंत सरल थी, संगीत का स्वरूप भी अत्यंत सरल था। वह साधारण जनता के लिए ग्राह्य था अर्थात उस समय केवल लोक संगीत का ही प्रचलन था। कालांतर में विदेशी आक्रमणों से तथा उनके द्वारा भारत में आ कर बसने से भारतीय समाज के स्वरूप में परिवर्तन आया जिसके परिणामस्वरूप संगीत के स्वरूप में भी परिवर्तन आ गया। अब संगीत के 2 रूप लोक संगीत तथा शास्त्रीय संगीत अस्तित्व में आ गए।

वर्तमान युग वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति का युग है। इस प्रगति का समाज के स्वरूप पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है फलतः संगीत के स्वरूप में भी अनेक परिवर्तन आ गए हैं। आज संगीत के अनेक रूप प्रचार में आ गए हैं। यथालोक संगीत, शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, फिल्मी संगीत आदि। जनसंचार के द्रुतगामी साधनों के विकास ने संगीत को जन–जन के लिए सुलभ बना दिया है। भारतीय सुगम संगीत तथा फिल्मी संगीत पर पाश्चात्य संगीत का प्रभाव भी संचार के द्रुतगामी साधनों का परिणाम है। यद्यपि शास्त्रीय संगीत के ज्ञान के अभाव में श्रेष्ठ फिल्मी संगीत की कल्पना नहीं की जा सकती, तथापि आज के तेज गति से चलने वाले समाज में शास्त्रीय संगीत की तुलना में फिल्मी संगीत कहीं अधिक लोकप्रिय हो गया है। इस प्रकार समाज के बदलते स्वरूप ने संगीत के स्वरूप में पर्याप्त परिवर्तन लाने का कार्य किया है। यहां दि–27.09.2012 को पंजाब विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में आयोजित व्याख्यान में समाजशास्त्र के प्रो. वीरेंद्र पाल सिंह के इस उद्धरण का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा। संगीत और समाज में गहरा संबंध रहा है और भारतीय संगीत समाज में पनप रही विभिन्न विधाओं के प्रतिबिंब के रूप में उभरा है। [5]

संगीत समाज को जोड़ने का साधन

संगीत समाज का आधार ही नहीं अपितु उसको जोड़ने का एक सशक्त साधन भी है। वर्तमान समाज अनेक वर्गों, जातियों, उपजातियों तथा धर्मों को मानने वाले लोगों से मिलकर बना है, जो विभिन्न भाषाएं बोलने वाले हैं। संगीत की भाषा सर्वग्राह्य है, इसलिए वह विभिन्न भाषा–भाषी लोगों को जोड़ने का कार्य भली भांति कर सकता है। हेनरी वांगस्वर्थ लांगफेलो ने सच ही कहा है,

"Music is the universal language of mankind" [6] इस प्रकार संगीत रूपी भाषा से, जो कि सबकी समझ में आती है, संपूर्ण विश्व को एक करने का कार्य किया जा सकता है।

शिक्षा में संगीत का स्थान

किसी भी समाज के सदस्यों को एकसूत्र में बांधने के लिए उसके भविष्य अर्थात बच्चों को उचित शिक्षा प्रदान करना अनिवार्य हे। संगीत, जो कि जाति तथा भाषागत विभिन्नता वाले समाज को जोड़ने का कार्य सुचारू रूप से कर सकता है, को विद्यार्थियों की शिक्षा में उचित स्थान प्राप्त होना चाहिये। प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व बताई अपनी शिक्षा योजना में संगीत की अनिवार्यता को स्वीकार किया था। प्लेटो ने 6 से 18 वर्ष तक के विद्यार्थियों के लिए जिस प्रारंभिक शिक्षा का उल्लेख किया था उसमें केवल 2 विषयों का समावेष था गणित तथा संगीत। यद्यपि गणित के अंतर्गत समस्त विज्ञान तथा व्यायाम शास्त्र भी सम्मिलित था और संगीत के अंतर्गत समस्त कलाओं का समावेष था, तथापि आत्मा की शुद्धि के लिए संगीत को प्लेटो ने अत्यंत महत्वपूर्ण माना। [7]

हमारे राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने भी शिक्षा में संगीत को उचित स्थान देने का समर्थन किया। [8]

उन्होंने ठीक ही लिखा है, "यह दुःख की बात है कि आजकल सामान्यतः संगीत की उपेक्षा हो रही है। जिस शिक्षा में संगीत का स्थान न हो, वैसी शिक्षा मुझे तो अपूर्ण ही लगती है। संगीत व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में मधुरता लाता है। जिस प्रकार श्वसन क्रिया को नियमित करने के लिए प्राणवायु की आवश्यकता होती है, उसी तरह कंठ के व्यायाम के लिए संगीत आवश्यक होता है। संगीत क्रोध को शांत करता है। संगीत ईश्वर–दर्शन को प्राप्त करने के प्रयत्नों में सहायक बनता है। ईश्वर के साथ एकरूप करने का दूसरा अर्थ है जीवन को संगीतमय बनाना। मानव की पशु वृत्तियों का दमन करने के लिए एवं दैवी गुणों का विकास करने के लिए संगीत अत्यावश्यक है।"

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

इस प्रकार संगीत और समाज में घनिष्ठ संबंध है। यदि समाज में व्याप्त बुराईयों को हम समाप्त करना चाहते हैं, तो इसमें संगीत एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है अतः मनुष्य की आत्मा को विकार रहित बनाने हेतु शिक्षा में संगीत को उचित स्थान प्रदान कर समाज को पतन के गर्त में गिरने से बचाया जा सकता है।

संदर्भ –

1 *प्रमुख राजनीतिक विचारक, श्रीराम वर्मा कॉलेज बुक सेंटर जयपुर 2005 पृ 86*
2 *The role of music in human culture Vikas Shah Thought Economics 2013 downloaded from Internet*
3 *Ibid*
4 *संगीत पुष्प कुंज (भारतीय शास्त्रीय संगीत विषयक संकलित लेख संग्रह) कु. ज्योति पारेख नेशनल एसोसिएशन फार द ब्लाईंड मुंबई पृ 22*
5 *दैनिक भास्कर पटियाला दि. 27–09–2012*
6 *इंटरनेट से उद्धृत*
7 *प्रमुख राजनीतिक विचारक वही पृ 41*
8 *संगीत पुष्प कुंज वही पृ 7*